11 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चित्रित स्त्री जीवन का निहितार्थ

सोहन लाल रांगेरा*
शोधार्थी, हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर।
*Corresponding Author: sonurangerass@gmail.com

सार

हिंदी में दलित लेखन की परम्परा के अग्रणी रचनाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से न केवल दलित जीवन अपितु स्त्रियों की समस्याओं, उनके अधिकारों व परेशानियों को व्यक्त करने की कोशिश की है बल्कि स्त्रियों के सहयोग, परिश्रम, पारिवारिक त्याग, समर्पण की स्थिति का अवलोकन एवं विश्लेषण करते हुए उन्हें पुरूषों के समान अधिकार व आजादी प्रदान करने की वकालत की है। एक तरफ जहां स्त्रियों को पुरूषवादी सोच तथा पितृसत्तात्मक समाज ने सामाजिक शर्तों व बंधनों के आधार पर उन्हें सदियों से गुलामी व शोषणकारी सोच की बेड़ियों में जकड़ा रखा वहीं दूसरी ओर उन्हें स्वतंत्र जीवन जीने व पारिवारिक स्थितियों में सहभागी बनने से हमेशा दूर रखा है। इस सोच का पर्दाफाश वाल्मीकि जी ने अपनी कहानियों "अम्मा", "यह अंत नहीं", "चिड़ीमार" के माध्यम से किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के कथा साहित्य में चित्रित स्त्री गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, जातिगत पीड़ा, दंश का शिकार होकर भी हार नहीं मानती बल्कि अपने हक व अधिकारों को प्राप्त करने तथा समाज में सम्मान से जीने के लिए संघर्षरत दिखाई पड़ती हैं। भारतीय संविधान में समान अधिकार प्राप्त होने के बावजूद महिलाओं के प्रति व्यावहारिक स्थिति युग की व्यवस्था का अमल दर्शाती है। तमाम अमानवीय और भेदभावपूर्ण व्यवहार से पीड़ित स्त्रियों का मनोबल गिरता है एवं उनके मानवीय गरिमापूर्ण अस्तित्व को आहत करता है।

शब्दकोशः परम्परा, समर्पण, पितृसत्तात्मक, सम्मान, संघर्षरत, संविधान, मानवीय, अस्तित्व।

प्रस्तावना

दलित साहित्य ने हिंदी साहित्य में हाशिये पर पड़ी आवाजों को केंद्र में लाने का कार्य किया है, चाहे वह दलित लेखन हो या महिला लेखन हो या आदिवासी लेखन के रूप में हो। आज इन लेखनों के माध्यम से उन वंचितों, शोषितों में समाज से हाशिये पर धकेल दिए गए एक बड़े समुदाय के

अंतर्मन में चल रही वेदना, संघर्ष और जिजीविषा की स्थिति को प्रकट करने का प्रयास किया जा रहा है जो कल्पित और रोमानियत के दायरे से बाहर निकाल कर यथार्थ और संवेदना की दृष्टि से वास्तविक जीवन के पहलू को उजागर करती हुई दिखाई देती है। यह लेखन आंदोलन के मूल से उपजा हुआ है इसलिए इसके केंद्र में जहां एक और वंचित,शोषित, पीड़ित, समाज के अधिकारों को वापस दिलाने की वकालत की जा रही है वहीं दूसरी ओर उनके नैतिक मूल्य, सिद्धांतों को सम्मान देने की कोशिश की जा रही है ताकि उनके साथ नैसर्गिक, लोकतांत्रिक, सामाजिक न्याय किया जा सके। भारतीय समाज की सामाजिक संरचना का अध्ययन करने पर यह देखने को मिलता है कि भारतीय समाज की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने के बावजूद भी स्त्रियों की स्थिति और दशा आज भी अत्यंत चिंताजनक दिखाई देती है। निश्चित तौर पर स्त्रियों की स्थिति के प्रति साजिशों क`पर्दाफाश का मूल्यांकन इस कथन में छुपा दिखाई पड़ता है "पितृसत्ता का निर्माण पुरुषों ने किया और हमें इसी तरह पाला– पोसा जाता है कि हम उसे स्वाभाविक मान लेते हैं। छोटी–छोटी लड़कियों को भी इसी तरह प्रशिक्षित किया जाता है कि आमतौर पर वे रूमानी प्रेम के चित्रण के जरिए अपनी–अपनी जेंडर भूमिका को स्वीकारें"। इस कथन में पितृसत्ता के स्वरूप का चित्रण किया गया है जो महिलाओं को महिला बनाए रखना, उनको शारीरिक, मानसिक तौर पर परतंत्र बनाए रखने की साजिशों को दर्शाता है। इन साजिशों के आधार पर महिलाओं को एक और जहां मानसिक रूप से हीन,भावुक व बुद्धिमान बनाकर उनके ऊपर स्वामित्व का प्रभुत्व जमाना आसान रहा है तो वहीं दूसरी ओर उन्हें शारीरिक रूप से आकर्षक, सुंदर, सुडौल, मर्यादा के आवरण से लिपटा रहना ही उनके नारीत्व धर्म के अनुकूल समझा जाता रहा है। यही चाह उन्हें संस्कार रूप में सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी मिलती रही है जिसको अपनाकर खुद को भारतीय नारी और समाज में सम्मान की भागीदार बने की कोशिश करती रहती हैं लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि इन साजिशों के आधार पर उनकी स्वतंत्रता, अधिकार, अस्मिता को निरंतर दबाने की कोशिश की जाती रही है। निश्चित तौर पर पुरुषवादी समाज द्वारा महिलाओं के साथ किए जाने वाले भेद भाव को देखते हुए ही पाश्चात्य विदुषी सीमोन द बउवार ने लिखा है कि"स्त्रियां पैदा नहीं होती बनाई जाती हैं"। जो स्त्रियों की यथार्थ वास्तविक स्थिति को चित्रित करता है।स्त्रियां घर में और बाहर दोनों जगह शोषण का शिकार होती है। घर में हो रहे शोषण को बारीकी से उठाते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी कहानियों में दर्शाते हैं कि स्त्री का शोषण बाहर ही नहीं होता बल्कि घर के अंदर उसका शोषण ज्यादा होता है। वह अपने ही घर में अपनी अस्मत बचाने के विभिन्न प्रयास करती है। उनकी आत्मकथा जूठन (1997) तथा कहानी–संग्रह सलाम (2000), घुसपैठिये (2003) आदि में स्त्री जीवन का गहरा चित्रण मिलता है।वाल्मीकिजी की कहानियों में स्त्रियाँ केवल शोषण का शिकार ही नहीं, बल्कि प्रतिरोध और संघर्ष की प्रतीक भी बनकर उभरती हैं।

वाल्मीकि की कहानियों में चित्रित स्त्री जीवन संघर्ष

- **दोहरे शोषण की अभिव्यक्ति, जातिगत अन्याय –** "यह अंत नहीं" कहानी सवर्ण अत्याचारों के विरुद्ध आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, स्वाभिमान, संघर्ष संगठन आदि के गहरे निहितार्थों का दस्तावेज है। इस कहानी ने एक स्त्री के साथ हुए शारीरिक व भावनात्मक शोषण के प्रति पंचायत व्यवस्था व पुलिस राज की दलित महिलाओं के प्रति हिकारत और हृदयहीनता को उघाड़कर रख दिया गया है पर वाल्मीकि जी इन सारी परिस्थितियों के बीच नाउम्मीद नजर नहीं आते हैं। बिरमा की मुखरता ने सभी में आशा का संचार कर दिया था, सभी ने मिलकर

कहा था, "ना बिरमा " यह अन्त नहीं है..... तुमने हमें ताकत दी है। हार को जीत में बदलेंगे, लोगों में विश्वास जगाकर, ताकि फिर कोई बिशन मोहरा ना बने"।[1]

- **प्रतिरोध का स्वर –** स्त्रियाँ अन्याय को चुपचाप नहीं सहतीं, वे विद्रोह करती हैं। अपनी कहानी "अम्मा"में लेखक ने एक ऐसे अदम्य साहस से भरपूर दलित स्त्री का चित्रण किया है जो अपने यौन शोषण के खिलाफ आवाज ही नहीं उठाती बल्कि उसका मुंह तोड़ जवाब भी देती है। वह अपनी रोजी–रोटी की फिक्र ना करते हुए करारा प्रहार करती है। "वह बंधन ढीला करने के लिए जोर लगा रही थी जैसे ही पकड़ कुछ कम हुई, झटका देकर उसने खुद को मुक्त कर लिया। हाथ में थमी झाड़ू की मूठपर हथेली कस गई, पूरी ताकत से झाड़ू का वार सीधा उसकी कनपटी पर किया। चोट लगते ही वह लड़खड़ा गया और बेडरूम की तरफ भागा। अम्मा लगातार उसे पीटते हुए बेडरूम में घुस गई। वह नीचे फर्श पर गिर पड़ा था। अम्मा की झाड़ू सड़ाक– सड़ाक पड़ रही थी। मुंह से गालियां फूट रही थी"।[2]

मिसेज चोपड़ा ने उसके हाथ से झाड़ू छीननेकी कोशिश की। अम्मा ने उसे भी धक्का देकर पीछे धकेल दिया। दो–तीन वार और किए। रुक कर बोली, "भैण जी इस हरामी के पिल्ले से कह देना। हर एक औरत छिनाल ना हो वैहै"। अम्मा की आंखों में लाल सुर्ख डोरे अंगारों की तरह दिख रहे थे"। यह स्त्री के आत्मसम्मान, चारित्रिक उत्कृष्टता और प्रतिरोध की मिसाल है।[3]

- **शिक्षा और सुधार के लिए संघर्ष –** 'अम्मा' कहानी की अम्मा अपना स्वतंत्र परिचय खा चुकी एक ऐसी सच्चरित्र, खुद्दार नारी है, जिस की निष्ठा, लगन और ईमानदारी की मिसाल अब कहानियों में मिल सकती है, समाज में नहीं। एक छोटे से आंगन में टीन की छत और लकड़ी के फट्टों को जोड़कर बना ली गई रहने भर की जगह को वह अपना घर कहती है।स्वतंत्र भारत में 25करोड़ आबादी में से 10 करोड़ दलित अम्माएं ऐसी ही जगह रहती हैं। स्वच्छकार महिलाओं का काम कितना अस्वस्थतादायी और मुश्किल है परंतु वे विकल्प के अभाव में यह काम कर के भी अपने बच्चों की शिक्षा– दीक्षा दिलवाकर बेहतरी का प्रयास करती हैं। अम्मा ने अपने बच्चों को हमेशा झाड़ू के काम से दुर रखा। यहाँ तक कि हारी– बीमारी में भी बच्चों को काम करने नहीं भेजा। यह अम्मा की जिद थी कि बच्चों को पढ़ा लिखा कर आत्मनिर्भर बनाया जाए। सास ससुर या जात– बिरादरी के लोग टोकते तो कह देती,"ना....मैं..... अपने जातकों को इस गंदगी में ना धकेलूंगी। मेहनत– मजूरी करा लूंगी, पर उनके हाथ में झाड़ू ना दूंगी"।[4]
- **पितृसत्तात्मक दमन के प्रति संघर्ष –** ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ स्त्री जीवन की असल स्थिति सामने लाती हैं।घुसपैठिये संग्रह की कहानी "जिनावर"में एक स्त्री अपने ही ससुर के यौन–शोषण का शिकार बनती है। उद्धरण "मेरा ससुर... ससुर नहीं, खसम बनना चाहता था मेरा। मैंने विरोध किया तो मुझे मारा–पीटा गया... फिर भी हार नहीं मानी।"[5]

हमारे समाज की विडंबना यह है कि स्त्री अगर अपने यौन शोषण के प्रति आवाज उठाती है तो उसकी आवाज को हमेशा दबा दिया जाता है। उसके औरत होने की बात याद दिला दी जाती है।उक्त कहानी में जब पीड़िता यौन शोषण की बात अपने पति से कहती है तो उसका स्वयं का पति ही बोलता है कि"मेरे बाप के खिलाफ एक भी लफ्ज बोली तो हाड़– गोड़ तोड़ केधर दूंगा। जिंदगी भर लूली–लंगडी बनकर घाट पर पड़ी रहेगी..... औरत है तो औरत बणके रहे....."।[6] वाल्मीकि जी ने 'जिनावर' कहानी के माध्यम से समाज की उस सच्चाई का बयान किया जिससे औरतें हमेशा इस मानसिकता से

दो–चार होती हैं। जब वह अपने ही घर में हो रहे यौनशोषण की बात परिवार में किसी स्त्री को बताती है तो वह अज्ञानता, आर्थिक असक्षमता, घर की इज्जत का, रिवाज का हवाला देकर उस को सहने की बात करती है।

उसकी सास के शब्दों में "इस घर का तो रिवाज ही है औरत सिर्फ इस्तेमाल की चीज है इस घर में रिश्तों की मर्यादा का कोई मतलब ना है, बहू जिंदगी सुख चैन से काटनी है तो समझौता कर ले"। यह कहानी स्त्री की दुर्दशा के साथ–साथ उसके साहस और प्रतिरोध की कथा है । "बहू की वेदना एक मात्र एक कथित चौधराईन की वेदना नही है, अपितु भारतीय नारी की गरिमा– शून्यता का कड़वा यह सच अधिकांश स्त्रियों के जीवन में घटित होने वाली आशंकाएं लिए हुए होता है।बहू उन बहुसंख्य स्त्रियों की स्थितियों का प्रतिनिधित्व करती है"।[7]

- **पुरातन व परंपरावादी सोच का पालन –** एक तरफ जहां स्त्रियों को पुरुषवादी सोच एवं पितृसत्तात्मक समाज ने सामाजिक शर्तों में नियमों के आधार पर उन्हें सदियों से गुलामी और शोषणवादी सोच की जंजीरों में बांधता रहा है वहीं दूसरी ओर उन्हें स्वतंत्र जीवन जीने एवं पारिवारिक स्थितियों में सहभागी बनाने से हमेशा दूर रखता रहा है। इसका पर्दाफाश वाल्मीकि ने अपनी कहानी 'अम्मा','यह अन्त नहीं'एवं'चिड़ीमार' कहानी के माध्यम से किया है।इन कहानियों में चित्रित स्त्री पात्र चाहे वह अम्मा की सास हो, बिरमा की मां हो अथवा 'चिड़ीमार' में सुनीति की मां हो लगभग सबकी स्थिति इन्हीं अवधारणाओं को अपने विचारों में पोषित किए हुए दिखाई पड़ता है।चूंकि ये सभी पात्र पुरातन व परंपरावादी सोच से निर्मित पात्र हैं इसलिए उनके यहां भारतीय रीति रिवाज, सामाजिक मर्यादाएं, आदर्श,सतीत्व की लाज आदि जैसे मूल्यों का संवर्धन एवं उसको परंपरागत बनाए रखने की चाह देखने को मिलती है। वे अपने शोषण व अमानवीय अत्याचारों को सामाजिक मर्यादा व स्त्रीत्व धर्म की चादर से ओढ़े रखना ज्यादा पसंद करती हैं।यही कारण है 'यह अंत नहीं'कहानी में जब बिरमा की मां बिरमा के साथ गांव के जमींदार के लड़के सचीन्दर द्वारा छेड़खानी की बात को सुनती है तो वह उसे इस बात को अपने तक रखने की सलाह देती है।वह इसके परिणाम को बखूबी जानती है इसलिए अपने "आंखों के भीगे कोर आंचल से पोंछते हुए उसने बिरमा को समझाने की कोशिश की। उसने ऊंच– नीच समझाई, बदनामी का डर दिखाकर चुप रहने की सलाह दी"।

"अम्मा" कहानी में मिसेज चोपड़ा के घर विनोद द्वारा अम्मा के साथ हुई छेड़ छाड़ के कारण जब उसने मिसेज चोपड़ा का ठिकाना हरदेई को 20 रूपये में बेच दिया तो इस पर न केवल सास ने बल्कि पति 'शिवचरण' ने भी अपनी नाराजगी व्यक्त की। सास ने तो पूरे घर में को हराम मचा दिया मानो उसकी कोई बेशकीमती वस्तु बेच दी गई हो लेकिन अम्मा जागरूक और समझदार स्त्री थी, इसलिए वह उसके पीछे की पीड़ा और अनुभूति की टीस को बखूबी समझ रही थी। चूंकि अम्मा की सास पारंपरिक मूल्यों, आदर्शों व मर्यादित स्त्रीत्व को अपनाई हुई स्त्री है। इसीलिए उनके लिए अपने परंपरागत कार्यों, मूल्यों से जुड़े रहना वाजिब लगता है।

- **सामाजिक यथार्थ का चित्रण –** ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री शोषण के ऐसे सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है जो समाज व परिवार द्वारा हो रहे विभिन्न रूपों में कमोबेश सभी जगह दृष्टिगोचर होता है। स्त्री इस पुरूष समाज में बच्चा पैदा करने तथा पुरूष के शरीर की भूख मिटाने के सिवाय कुछ नहीं है। अगर किसी

कारण से वह मां ना बन सके तो समाज तथा परिवार में उसकी कोई अहमियत नहीं रह जाती। उस पर विभिन्न प्रकार के जुल्म किए जाते हैं। लगता है जैसे सारा दोष स्त्री का ही है। और तो और ये लांछन लगाने में पुरूषों के साथ– साथ स्त्रियां स्वयं भी सहभागी बन जाती हैं। 'ग्रहण' कहानी में वाल्मीकि ने स्त्री के इसी शोषण व दर्द का चित्रण किया है।

"अरे नासपीट्टे ऐसे रूप – रंग का क्या अचार घेरना है, जो एक चूहिया का बच्चा भी ना जन सके"।[7]

इसके साथ ही लेखक ने 'ग्रहण' कहानी के माध्यम से समाज की विडम्बना बेटादृबेटी के भेदभाव को भी चित्रित किया है। हमारे भारतीय समाज में जैसे स्त्री की पहचान ही तब बनती है जब वह बच्चा जने और वह भी लड़का, उसकी अपनी अस्मिता जैसे कि बेटे के जन्म पर ही निर्भर होती हो।"सोहणी है तो क्या हुआ..... एक बच्चा तो जन के दिखावे, मन्ने तो साद्दी के नवें महन्ने में ही सास की गोद में बेट्टा दे दिया था। ले रीलाल सिंभाल। फेर न कहियो की पोता नी दिया। इन जुमलों के साथ सिर मिलाकर बैठी औरतों के कहकहे घर– आंगनों में गूंजने लगे थे"।[8]

अपनी कहानियों के माध्यम से ओमप्रकाश वाल्मीकि ने समाज तथा परिवार में हो रहे स्त्री शोषण का बहुत ही बारीकी से चित्रण किया है। समय–समय पर ये स्त्रियां अपने शोषण के खिलाफ आवाज भी उठाती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री पात्रों तथा उनके शोषण को पढ़कर ऐसा लगता है कि ये स्त्री चरित्र सिर्फ वाल्मीकि की कहानियों का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती बल्कि हमारे समाज की ज्यादातर स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो हमेशा इस समस्या से टकराती है।

निष्कर्ष

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में स्त्री जीवन का चित्रण करुणा और संघर्ष से भरा हुआ है।अम्मा जैसी स्त्रियाँ परंपरा को तोड़कर बच्चों के भविष्य के लिए लड़ती हैं। जिनावर की स्त्री यौन–शोषण के खिलाफ विद्रोह करती है। खानाबदोश की स्त्री हाशिये पर रहकर भी अस्तित्व की लड़ाई लड़ती है। इस प्रकार, वाल्मीकि की कहानियों में स्त्रियाँ दलित जीवन के दर्द की वाहक होते हुए भी आत्मसम्मान और प्रतिरोध की मजबूत पहचान प्रस्तुत करती हैं। निश्चित तौर पर इन स्त्री पात्रों के माध्यम से लेखक ने समाज के उस सच को उजागर करने की कोशिश की जिसका चित्रांकन गैर दलित लेखकों ने अपनी दलित विषय रचनाओं के माध्यम से दलित स्त्री पाठकों के गठन में किया है।क्योंकि रचनाकारों के यहां आदर्श, मर्यादा, अस्तित्व एवं पारंपरिक मूल्यों को लेकर चलने वाली एवं दलित जीवन की पीड़ा सहनेवाली दलित स्त्रियों में देखने को मिल जाती है लेकिन इन मूल्यों के प्रतिरोध का स्वरूप गैरदलित साहित्यकारों के यहां उस तरह नहीं दिखाई पड़ता। जिस तरीके से ओमप्रकाश वाल्मीकि जैसे दलित रचनाकारों के यहां देखने को मिलता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानी के माध्यम स्त्रियों की जहां एक ओर अशिक्षा, जागरूकता की कमी से पारिवारिक शोषण एवं गुलामी का शिकार होने, गरीबी लाचारी के कारण पारंपरिक कार्यों को यथावत करते रहने, रूढ़िवादी,धार्मिक आडम्बरों के प्रभाव से छलावे का शिकार होने, पुराने मूल्य विचारों के कारण तकरार से संबंधों में दरार आने, आर्थिक स्थिति में भूमिका के रूप में खुद को तैयार रखना जैसी स्थिति का चित्रण है तो वहीं दूसरी और पुराने मूल्यों, परंपराओं को छोड़ने,मुक्ति की चाह रखने वाली शिक्षा की प्रणाली, जागरूकता, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक बाध्यताओं के नियंत्रण को समझना, उनके खिलाफ एकजुट होकर पुरजोर विरोध करने वाली स्त्रियों को भी चित्रित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। घुसपैठिये। नई दिल्लीरू राधाकृष्ण प्रकाशन, 2003. (कहानीरू "यह अन्त नहीं", पृ. 29)
2. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। कहानियां प्रतिनिधि। नई दिल्ली – राजकमल प्रकाशन, 2023. सं. पल्लव (कहानी– "अम्मा", पृ.50)
3. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। कहानियां प्रतिनिधि। नई दिल्ली – राजकमल प्रकाशन, 2023. सं. पल्लव (कहानी– "अम्मा", पृ.50)
4. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। सलाम। नई दिल्ली– राधाकृष्ण प्रकाशन, 2000.(कहानी– "अम्मा", पृ.118)
5. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। सलाम। नई दिल्ली– राधाकृष्ण प्रकाशन, 2000.(कहानी– "अम्मा", पृ.118)
6. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। सलाम। नई दिल्ली– राधाकृष्ण प्रकाशन, 2000.(कहानी– "जिनावर", पृ.99)
7. वाल्मीकि नरेन्द्र। वंचितों के कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि। नई दिल्ली– कलमकार पब्लिशर्स, 2023. (पृ.72)
8. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। सलाम। नई दिल्ली– राधाकृष्ण प्रकाशन, 2000.(कहानी– "ग्रहण" पृ.99)
9. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। सलाम। नई दिल्ली– राधाकृष्ण प्रकाशन, 2000.(कहानी– "ग्रहण" पृ.99)